क्लर्क की मौत

अंतोन चेखव (1860-1904)

रूसी कथाकार, नाटककार चेखव की गिनती विश्व के सार्वकालिक महान लेखकों में होती है । उनका लेखन शासन व्यवस्था और उसके तंत्र की अमानवीयता को रेशे-रेशे में उघाड़ता है । आम आदमी की निरुपायता, उसकी लाचारगी रह-रहकर उनके लेखन में उभरती है । चेखव की कला विडंबनापूर्ण परिस्थितियों में फँसे व्यक्ति की करुण स्थितियों का ईमानदार साक्ष्य प्रस्तुत करती है । महान रूसी कथाकार लेव तोल्सतोय ने चेखव के लिए कहा था-''चेखव एक अतुलनीय कलाकार हैं । जी हाँ, निश्चित रूप से अद्वितीय । वह जीवन के कलाकार हैं । उनकी रचनाओं का गुण यह है कि वह बोधगम्य और भावनाओं के निकट हैं, न केवल प्रत्येक रूसी के लिए बल्कि प्रत्येक मानव के लिए....।''

एक सुंदर रात को क्लर्क, इवान द्मीत्रिच चेरव्यकोव अव्वल दर्जे की दूसरी पंक्ति में बैठकर दूरबीन की मदद से, 'लक्लोचेस दे कर्नविल' का आनंद ले रहा था । वह खेल देख रहा था और अपने को सबसे सुखी मनुष्य समझ रहा था, जब यकायक...कहानियों में 'यकायक' एक घिसा-पिटा शब्द हो गया है, किंतु लेखक सही ही हैं : जिंदगी अचंभों से भरी है ! तो, यकायक उसका चेहरा सिकुड़ गया, उसकी आँखें आसमान की ओर चढ़ गईं, उसकी साँस रुक गई .... वह आँखों से दूरबीन हटाकर अपने स्थान पर दोहरा हो गया और .... आक छीं !!! कहने का मतलब यह कि उसे छींक आ गई । यूँ तो हर किसी को जहाँ चाहे छींकने का हक है । किसान, थाने का दारोगा, यहाँ तक कि प्रिवी कौंसिल के मेंबर तक छींकते हैं - हर कोई छींकता है, हर कोई । चेरव्यकोव को इससे कोई झेंप नहीं लगी, रूमाल से उसने अपनी नाक पोंछी और एक शिष्ट व्यक्ति होते हुए अपने चारों तरफ देखा कि कहीं उसकी छींक से किसी को असुविधा तो नहीं हुई ? और तभी वह सचमुच झेंप गया क्योंकि उसने एक वृद्ध व्यक्ति को पहली पंक्ति में अपने ठीक आगे बैठा हुआ देखा जो अपनी गंजी खोपड़ी और गरदन को दस्ताने से पोंछ रहा था

और कुछ बड़बड़ाता जा रहा था । चेरव्यकोव ने उस बूढ़े को पहचान लिया कि वह यातायात मंत्रालय के सिविल जनरल ब्रिजालोव हैं ।

"मैंने उनके ऊपर छींका है !" चेरव्यकोव ने सोचा । "वह मेरे अफसर नहीं हैं, यह सही है, किंतु, तब भी यह कितना भद्दा है ! मुझे माफी माँगनी चाहिए ।"

हल्के से खाँसकर, चेरव्यकोव आगे झुका और जनरल के कान में फुसफुसाया :

"मैं क्षमाप्रार्थी हूँ, महानुभाव, मैं छींका था...मेरा मतलब यह नहीं था कि....."

"अजी कोई बात नहीं..."

"कृपया मुझे क्षमा कर दें । मैं ... यह जान-बूझकर नहीं हुआ था ..."

"क्या तुम चुप नहीं रह सकते ? मुझे सुनने दो !"

कुछ घबड़ाया हुआ चेरव्यकोव झेंप में मुस्कराया और खेल की तरफ मन लगाने की कोशिश की । वह खेल देख रहा था । किंतु उसे आनंद नहीं आ रहा था । बेचैनी उसका पीछा नहीं छोड़ रही थी । मध्यांतर में वह ब्रिजालोव के पास पहुँचा, थोड़ी देर के लिए उनके आसपास घूमा-फिरा और फिर साहस बटोरकर मिनमिनाया :

"हुजूर ! मैंने आप के ऊपर छींक दिया ... मुझे क्षमा करें ... आप जानते हैं ... मेरा यह मतलब नहीं ..."

"अरे बस ... मैं तो यह भूल भी गया था, छोड़ो अब इस बात को !" जनरल ने कहा और बेसब्री में उसका अधर फड़कने लगा ।

"कहते हैं कि भूल गए हैं, लेकिन आँखों में विद्वेष भरा है," चेरव्यकोव ने जनरल की ओर संदेह की नजरों से देखते हुए सोचा । "और बात नहीं करना चाहते ! मुझे उन्हें अवश्य समझना चाहिए कि मेरा यह मतलब नहीं था कि ... कि यह एक स्वाभाविक चीज थी, नहीं तो शायद वह यह सोच बैठें कि मैं उन पर थूकना चाहता था । अभी भले ही वह ऐसा न सोचें, लेकिन बाद में शायद सोचने लगें ..."

घर पहुँचकर चेरव्यकोव ने अपनी पत्नी को अपने अभद्र व्यवहार के बारे में बताया । उसे लगा कि उसकी बीवी ने इस घटना की बात बड़ी बेपरवाही से सुनी । पहले वह सहम गई, पर यह जानकर कि ब्रिजालोव 'पराया' अफसर है निश्चिंत सी हो गई ।

"लेकिन मेरा ख्याल है कि तुम्हें जाकर माफी माँग लेनी चाहिए," उसने कहा, "नहीं तो वह सोचेंगे कि तुम्हें भले आदमियों में बैठने का शऊर नहीं है ।"

"यही तो ! मैंने माफी माँगने की कोशिश की थी, पर इसका ढंग ऐसा अजीब था .... कोई कायदे की बात ही नहीं की । फिर वहाँ बात करने का मौका भी नहीं था ।"

अगले दिन चेरव्यकोव ने नई वर्दी पहनी, बाल कटवाए और ब्रिजालोव से माफी माँगने गया... जनरल का मुलाकाती कमरा प्रार्थियों से भरा हुआ था और जनरल खुद अपनी अर्जियाँ सुन रहा था । उनमें से कुछ से बात करने के बाद जनरल की निगाह उठी और चेरव्यकोव के चेहरे पर जा अटकी ।

''हुजूर, कल रात, 'आर्केडिया' में, अगर आपको याद हो,'' क्लर्क ने कहना शुरू किया, ''मैं.. आ .. मुझे छींक आ गई थी, और ... आ... ऐसा हुआ .... मैं क्षमा चाहता ...''

''उफ, क्या बकवास है !'' जनरल ने कहा और दूसरे आदमी की ओर मुड़ा ।

''मेरी बात सुनते नहीं !'' डर से पीले पड़ते हुए चेरव्यकोव ने सोचा, ''इसका मतलब है वह मुझसे नाराज हैं । बात यहीं खत्म नहीं की जा सकती .... मुझे यह बात उन्हें समझा ही देनी चाहिए ।''

जब जनरल अंतिम प्रार्थी से बात करके अपने निजी कमरे की ओर जाने के लिए मुड़ा, चेरव्यकोव उनके पीछे भिनभिनाता हुआ जा पहुँचा :

''हुजूर मुझे माफ करें ! हार्दिक पश्चाताप होने के कारण ही मैं आपको कष्ट देने का दुस्साहस कर पा रहा हूँ ।''

जनरल ने रुआँसा चेहरा बनाया, हाथ हिलाया और ''तुम तो मेरा मजाक उड़ा रहे हो, जनाब !'' कहकर वह दरवाजे के पीछे छिप गया ।

''मजाक ?'' चेरव्यकोव ने सोचा, ''मुझे तो इसमें कोई मजाक की बात दिखाई नहीं देती । जनरल हैं पर इतनी सी बात नहीं समझते ! बहुत अच्छा, मैं इस भले आदमी को अब अपनी क्षमा-प्रार्थनाओं से परेशान नहीं करूँगा । भाड़ में जाएँ वह ! मैं उन्हें एक पत्र लिख दूँगा, मैं अब उनके पास जाऊँगा नहीं ! हाँ, मैं नहीं जाऊँगा, बस !''

ऐसे ही विचारों में डूबा चेरव्यकोव वापस घर पहुँचा, पर उसने पत्र नहीं लिखा । उसने बहुत सोचा-विचारा, लेकिन वह यह नहीं तय कर पाया कि बात किन शब्दों में लिखी जाए । अतः अगले दिन फिर, उसे मामला साफ करने के लिए जनरल के पास जाना पड़ा ।

''श्रीमान् ! मैंने कल आपको कष्ट देने की जो हिम्मत की थी ...'' उसने कहना शुरू किया, अब जनरल ने उस पर प्रश्नसूचक निगाह डाली, ''आप पर हँसने के लिए नहीं, जैसा कि हुजूर ने कहा, मैं आपके पास माफी माँगने आया था, कि आपको मेरी छींक से कष्ट हुआ ... जहाँ तक आपका मजाक उड़ाने की बात है, मैं ऐसी बात कभी सोच भी नहीं सकता, मैं यह हिम्मत कैसे कर सकता हूँ ? अगर हम लोगों के दिमाग में ऐसे व्यक्तियों का मजाक बनाने की बात घर कर जाए, तो फिर सम्मान की भावना कहाँ रह जाएगी .... बड़ों की कोई इज्जत नहीं रह जाएगी ....''

''निकल जाओ यहाँ से !!'' गुस्से से काँपते, लाल पीले हो, जनरल चीखा ।

भय से स्तंभित हो, चेरव्यकोव फुसफुसाया : ''क - क - क्या ?''

पैर पटकते हुए जनरल ने दोहराया : ''निकल जाओ !!''

चेरव्यकोव को लगा जैसे उसके भीतर कुछ टूट सा गया हो । लड़खड़ाते हुए पीछे चलकर वह दरवाजे तक पहुँचा, दरवाजे से बाहर आया और सड़क पर चलने लगा । वह न कुछ देख रहा था, न कुछ सुन रहा था ... संज्ञाशून्य, यंत्रचालित सा वह सड़क पर बढ़ता गया; घर पहुँचकर वह बिना वर्दी उतारे, जैसे का तैसा, सोफे पर लेट गया और .... मर गया ।

❑❑❑